SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जल संरक्षणः नन्हें कदम बड़े लक्ष्य की ओर

रश्मि वर्मा

स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यमिक विद्यालय, चक्रधर नगर, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

रश्मि वर्मा

E-mail : vermarashmi649@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/11/2024
Revised on : 01/01/2025
Accepted on : 10/01/2025
Overall Similarity : 00% on 02/01/2025

शोध सार

मानव शरीर में 70 प्रतिशत जल होता है। शरीर की सारी क्रियाएं जल पर आधारित होती हैं, कम पानी पीने से विषाक्त पदार्थ उत्सर्जित नहीं हो पाते और कई रोग पैदा करते हैं। पानी से शरीर का ताप नियंत्रित रहता है, त्वचा स्वस्थ रहती है। कृषि, उद्योग, घर, पर्यावरण सभी के लिए जल आवश्यक है। यह प्रकृति का अनुपम उपहार है। वर्तमान में हमारा देश गंभीर जल संकट के कगार पर है, नदियां सूख रही है या जो हैं वे प्रदूषित हो रही हैं। वन काटने से भू जल स्तर कम हो रहा है, पुराने तालाब, बावड़ी और कुएं सूख रहे हैं। जल स्रोतों को पाट कर उद्योग और मकान बनाए जा रहे हैं। जल में जमीन का पुर्नभरण नहीं हो रहा है। वर्तमान में एक–एक बूंद का संचय करना नितांत आवश्यक है, ऐसे में जनसंख्या भी बढ़ती जा रही है। लोगों की लापरवाही और सही आदतों का ना होना इस संकट को और बढ़ा रहा है ऐसे में शालेय परिवेश जो की भावी पीढ़ी को तैयार करते हैं। उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए उत्तरदायी हैं। उनमें सही आदतों का बीजारोपण और जल संकट के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विद्यालय ही सबसे बढ़कर और कारगर जगह है। सही आदतें व्यक्तित्व में चार चांद लगाती तो है साथ ही कई समस्याओं से भी निजात दिलाती हैं और आवश्यकता के अनुसार समाज का निर्माण करती हैं।

मुख्य शब्द

जल संरक्षण, पुर्नभरण, ढबरी, सर्वांगीण, भूजल स्तर, छात्र.

प्रस्तावना

जल संरक्षण का अर्थ है पानी का कुशलता पूर्वक उपयोग करना ताकि आवश्यक जल के उपयोग को कम किया जा सके। ''फ्रेशवाटर वॉच के अनुसार– जल

संरक्षण इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ताजा स्वच्छ जल एक सीमित संसाधन है साथ ही यह महंगा भी है।"

"जल का नहीं कोई विकल्प।
जल बचाने का लें सभी संकल्प।।"

जल प्रबंधन की आवश्यकता

भारत में ताजे जल के स्त्रोत मात्र 4 प्रतिशत ही हैं। विभिन्न एजेंसियों के आंकड़े बताते हैं कि शहरी क्षेत्र में 970 लाख लोगों को साफ पानी पीने के लिए नहीं मिल पाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो 70 प्रतिशत लोग प्रदूषित जल पीने को मजबूर हैं। भारत में अधिकांश जल स्रोतों का जल प्रदूषित है देश में जल की जो खपत होती है उसका 85 प्रतिशत तो केवल खेती के लिए ही उपयोग में आता है, केवल 10 प्रतिशत उद्योग उपयोग करते हैं और 5 प्रतिशत जल घरों में उपयोग में लाया जाता है।

भविष्य के उभरते गंभीर जल संकट को हम अपने जल पद चिन्हों को कम करके घटा सकते हैं, शायद खत्म भी बस, जरूरत है अपनी आदतों पर नजर रखने की।

जल संकट के प्रभाव

हमारे देश में पर्याप्त बारिश होती है लेकिन आदतों के सही न होने से तथा जल का उचित प्रबंध न हो पाने के अभाव में जल संकट गहराता जा रहा है। इसके दूरगामी परिणाम भयावह हो सकते हैं, स्वच्छ पेय जल की कमी होगी। जल की कमी से सामाजिक, आर्थिक समस्या उत्पन्न होती हैं। समाज में दंगे, अशांत वातावरण उत्पन्न होता है, जैव विविधता समाप्त होती है स्वच्छता की कमी से पर्यटन प्रभावित होता है, जिससे देश को आर्थिक हानि होती है। इसके लिए जागरुकता लाने की बहुत जरूरत है।

विद्यालयों में जागरुकता कार्यक्रमों का उद्देश्य

- विद्यालय में बच्चों को जागरूक करके जल बचाने की आवश्यकता के संदेश को घर–घर पहुंचाया जा सकता है, जिससे समाज और राष्ट्र में एक बड़ा परिवर्तन हो सकता है।
- बच्चे देश के भावी नागरिक हैं अतः अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होते हैं।
- अच्छे समाज के निर्माण में सहभागी बनते हैं।
- जब एक पीढ़ी सीखती है तो वैश्विक स्तर पर परिवर्तन की लहर दिखाई देती है।
- बच्चे करके सीखते हैं तो जागरूकता कार्यक्रमों की सार्थकता सिद्ध होती है, अपने साथ–साथ भविष्य के लिए कुछ करने की चाह पैदा होती है।

आदतें जिन पर कार्य किया जाना है:

- ब्रश, शेविंग, हाथों में साबुन मलते समय, बदन पर साबुन लगाते समय, बालों में शैंपू लगाते समय, नलों का पानी बहता नहीं रहने दें।
- टपकते, नलों की मरम्मत जल्दी से जल्दी कराना चाहिए।
- मूर्तियां को जल स्रोतों में विसर्जित न करें।
- पूजा के बाद बची हुई पूजन सामग्री को जल स्रोतों में ना डालें जिससे जल प्रदूषण न हो।
- हैंड पंप के पास यदि जल सोख गड्ढा बनाया जाए तो पानी उसी में से रिसकर जमीन में चला जाएगा, न तो कीचड़ होगा, ना ही मच्छर होंगे।

- समय–समय पर तालाबों का गहरीकरण हो।
- अपने कार्य स्थल में जल की बचत को लेकर हमेशा सावधान रहें।
- जैविक खाद ,जैविक कीटनाशक कृषि में उपयोग में लायें, जल स्रोतों को गंदगी से बचाए।
- एसी से निकलने वाला जल या आरो की फिल्टर प्रक्रिया से निकलने वाले जल को अथवा बर्तन साफ कर धोने के बाद बचे पानी का जहां संभव हो सके दोबारा उपयोग करना चाहिए।
- शौचालय के फ़्लश की टंकी में अगर थोड़े पत्थर या ईट रख दें तो वह जल्दी भर जाएगी और कम जल में ही सफाई का कार्य हो जाएगा इससे जल की भी बचत होगी।
- पौधों की सिंचाई रात में करें ताकि वाष्पोत्सर्जन में पानी की हानि कम से कम हो।
- वृक्षारोपण को अपनी आदत में शामिल करें उन पौधों की रक्षा करें और विभिन्न अवसरों पर पौधे ही उपहार में दें।
- पिकनिक मनाने जाएं तो वहां पर भी वृक्षारोपण करें ऐसी जगह पर वृक्षारोपण करें जहां पर उन्हें आसानी से नमी मिल सके इस तरीके से जड़ों के द्वारा पानी जमीन में उतरकर भूजल स्तर को बढ़ाएगा।

तात्पर्य यह है कि तीन R को जीवन का सिद्धांत बना लें।

REDUCE : सतर्कता से उपयोग (संभाल कर उपयोग– इसे ग्रे वाटर कहते हैं।)

REUSE : पुनः उपयोग (दोबारा उपयोग)

RECYCLE : पुर्नचक्रण (व्यर्थ जल, अपशिष्ट जल को साफ करके पुनः उपयोग में लाने योग्य बनाया जाना चाहिए।

जागरूकता कार्यक्रम

इन आदतों को व्यक्तित्व में समाहित करने हेतु कई जागरूकता कार्यक्रम विद्यालय में किए गए जैसेः

स्लोगन लिखना, पोस्टर बनाना, रंगोली निर्माण, नाटिका, गीत की प्रस्तुति पपेट शो के माध्यम से आदि।

स्लोगन लेखनः बच्चों ने स्वचेतना से जल सुरक्षा को लेकर स्लोगन लिखे।

''जब तक जल होगा, तभी तक जीवन होगा।''
''नलों से टप –टप, बंद करोगे कब?''
''जल होगा तभी स्वच्छता होगी।''
''कैसा कल? जब नहीं होगा जल।''
''भूजल स्तर बढ़ाना है, धरा पर वृक्ष लगाना है।''
''कैसी धरती? कैसा जीवन? जब नहीं धरती पर जल।''

पोस्टर निर्माण: जल संरक्षण एवम् जल संकट को लेकर पोस्टर निर्माण बच्चों के द्वारा किये गये। इससे बड़े–बड़े संदेश सहज ही घर– घर तक पहुँचाने में मदद मिलती है।

रंगोली: जल आज और कल, जल संकट विषय पर रोचक रंगोली का निर्माण किया गया। रंग और स्पष्ट उद्देश्यों का संयोजन व्यक्ति के दिलों दिमाग पर छाप छोड़ जाता है अतः जल संकट तथा जल संरक्षण जैसे विषयों को लेकर छात्र–छात्राओं के द्वारा रंगोली का निर्माण उनमें कला के साथ–साथ भविष्य के उत्तरदायित्वों की भूमिका का भी निर्माण करता है।

पपेट शो: पपेट शो के लिए बड़ी उत्सुकता से पपेट बनाना, उसे चलाना सीखा और नाटिका संग सुंदर मंचन किया।

शोधार्थी द्वारा लिखा गीत

गीत द्वारा लक्ष्य की अभिव्यक्तिः संगीत जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। संगीत इंसान के मन को तरों ताज़ा कर देता है। बड़े–बड़े उद्देश्यों की पूर्ति संगीत के माध्यम से सहज ही की जा सकती है और यदि लय, शब्द संयोजन सहज हो तो कहना ही क्या!

गीत – आओ जल बचाएं
आओ जल बचाएं, धरती पर जीवन लायें,
देखो भूल न जाना, कसम हमको आज ही लेना।
हो ....आओ जल बचाएं।
बहते पानी को हम रोकें, जो गलती करते उन्हें हम टोकें,
हो....
तभी तो पानी बचेगा,
जग में जीवन पनपेगा.. 2
हर इंसान मुस्कुराये हो...
आओ जल बचाएं।
ब्रश करते हैं, हम जब भी, नहाते हैं, हम तब भी ..2
जल को बेकार का न बहाना,
मग बाल्टी में पानी लेना, .. 2
इस तरह जल बचाना .... हो
आओ जल बचाएं।
गाड़ी को जब तुम धोते,
या फर्श को साफ करते,
नलों को खुला छोड़ देते,
देखकर बंद नहीं करते,
तो कैसे पानी बचेगा ?
जल को हर कोई तरसेगा .. 2
जल विहीन ये जग होगा, तो
आओ जल बचाएं।
गर चाहो जल को बचाना,
जन–जन में जागरूकता लाना,
पौधों को रात में सींचना,
धरा पर वृक्ष लगाना ... हो
जब जड़े गहराई में जाती,
भूजल स्तर को बढ़ाती ... 2
वर्षा जल को संचित करती ... हो
आओ जल बचाएं,
धरती पर जीवन लाएं,
देखो भूल न जाना,
कसम हमको आज है लेना,
आओ जल बचाएं।

जागरुकता गतिविधियों का लाभ

- इन जागरूकता गतिविधियों का सबसे बड़ा लाभ तो यह रहा कि इस कार्यक्रम के ठीक बाद विद्यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन हुआ और बच्चों ने स्वयं ही अच्छी आदतों को लेकर एक नाटक तैयार कर अपनी प्रतिभागिता दी और पपेट शो के माध्यम से गीत को प्रस्तुत किया जिससे यह समझ में आया कि जल संरक्षण को लेकर उनके मन में प्रयास की आस उत्पन्न हुई है।
- इस बात को भी उन्होंने अहसास किया कि हम कहां–कहां पानी व्यर्थ बहाते हैं।
- पानी को हम कहां दोबारा उपयोग में लाकर बचत कर सकते हैं।
- पूजन सामग्री को जल में नहीं बहाकर उसकी खाद बनानी है।
- पपेट बनाना सीखा।
- आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति की झलक दिखाई थी।
- विद्यालय का वातावरण आनंदमय बना और खेल–खेल में कई सारी विधाओं को बच्चों ने सीखा जो बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए बहुत आवश्यक भी है।

निष्कर्ष

जल के महत्व को समझना, भावी पीढ़ी के लिए जल बचाना। इतने बड़े लक्ष्य की पूर्ति को हम अपनी आदतों में सकारात्मक बदलाव लाकर कर सकते हैं। आवश्यकता है जागरूकता को दिल में प्रज्वलित करने की, अपने कर्तव्यों को निभाने की! दुनिया में सभी समस्याओं का एक ही हल है– सकारात्मक विचार परिवर्तन, करुणा, संवेदना के साथ आदर्शवादी पराक्रम करना।

संदर्भ सूची

1. https://www.smsfoundation.org, Accessed on 04/09/24.
2. https://www.acs.edu.gu, Accessed on 11/09/24.
3. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़ रायपुर कक्षा छठवीं।
4. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़ रायपुर कक्षा सातवीं।
5. https//www.constellation.com, Accessed on 08/09/24.
6. *अखंड ज्योति* फरवरी 2011 युग बसंत विशेषांक, पृ. 44 वर्ष 75 अंक 2।

****